B.M.A. College, Bakari
Deptt. of Sociology

Deptt. of Sociology — 25/09/2020
B.A. I (Gen & Hons). Paper-I   Date:- [redacted]
Sociology   By Dr. Rajesh Kr. Sociology

विषय: समाज एवं इसकी विशेषताएँ

आम तौर पर हम सभी बोल-चाल की भाषा में प्रायः समाज शब्द का प्रयोग करते हैं, लेकिन हम यहाँ समाज को समाजशास्त्रीय भाषा में परिभाषित करते हैं, " कुछ समाजशास्त्रीय विद्वानों के अनुसार समाज लोगों का ऐसा समूह है जिसका एक सामान्य क्षेत्र, सामान्य क्रिया एवं अन्तर्क्रिया एवं एक सामान्य संस्कृति होती है। समाज के उद्देश्य भी सामान्य ही होते हैं. यह सामाजिक समूह दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मिलने से बनता है एवं समाज के सभी व्यक्ति एक दूसरे को जानते-पहचानते हैं एवं एक-दूसरे के अन्तर्क्रिया एवं सहसहयोग करते हैं।

अब सवाल यह उठता है कि हम समाज की पहचान कैसे करेंगे? समाज की पहचान करने हेतु इसकी निम्न विशेषताओं पर ध्यान केन्द्रित करना होगा।

1. समाज अमूर्त होता है: जिसका तात्पर्य यह है कि जिसे हम आँखों से नहीं देख सकते बल्कि इसका सिर्फ एहसास कर सकते हैं। जैसे:- सामाजिक सम्बन्ध, प्यार, घृणा।
2. समानता एवं असमानता: जिसका तात्पर्य यह हुआ कि एक क्षेत्र, एक संस्कृति, एक भाषा होते हुए भी समाज के अंदर कुछ समानताएँ एवं असमानताएँ मौजूद होती हैं, जैसे:- प्रजाति, जाति, वर्ग, गोत्र इत्यादि.
3. सहसहयोग एवं संघर्ष:- समाज के अंदर यह दोनों तत्व भी पाए जाते हैं, यह तत्व यदि संतुलित मात्रा मे होतो समाज का विकास होता है यदि असंतुलित मात्रा मे होतो विनाश।
4. समाज एक प्रक्रिया है न कि उत्पाद:- इसे प्रक्रिया के रूप में इसलिए देखा जाता है कि इसका निर्माण क्रमिक प्रक्रिया के दौरान होता है और यह अमूर्त होता है, जबकि उत्पाद मूर्त।
5. समाज स्तरीकरण के रूप में:- यह देखा जाता है कि समाज का विकास कई रूपों मे होता है, जैसे:- वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था, जमींदारी व्यवस्था, सामन्ती व्यवस्था इत्यादि.